बिहार सरकार

पर्यावरण एवं वन विभाग

विश्व गौरैया दिवस

20 मार्च 2016

के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं की सूचना।

आईए! हम सब मिलकर बिहार के राजकीय पक्षी गौरैया का संरक्षण करें!

प्रतियोगिता सं० 1 – फोटोग्राफी प्रतियोगिता

विषय : गौरैया पक्षी अपने प्राकृतिक वास में।

पात्रता : यह प्रतियोगिता सभी उम्र के फोटोग्राफरों के लिए है।

कैसे भाग लें : इस प्रतियोगिता में गौरैया पक्षी के अधिकतम दो फोटोग्राफ विभाग के ई–मेल पता biharsparrowphoto@gmail.com पर अपने पूर्ण पता एवं मोबाईल फोन नम्बर के साथ भेज सकते हैं अथवा निदेशक, संजय गाँधी जैविक उद्यान, पटना के कार्यालय में डाक द्वारा या स्वंय दिनांक 16–03–2016 तक जमा कर सकते हैं।

पुरस्कृत प्रतिभागियों के अतिरिक्त विश्व गौरैया दिवस (20 मार्च, 2016) के अवसर पर प्रदर्शनी के लिए चयनित फोटोग्राफ्स को प्रतिभागिता प्रमाण–पत्र दिया जायेगा।

प्रतियोगिता सं० 2 – बच्चों की फोटोग्राफी प्रतियोगिता।

विषय: ''गौरैया पक्षी अपने प्राकृतिक वास में''

पात्रता : राज्य के किसी भी स्कूल के 12वीं वर्ग तक के बच्चे इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं।

कैसे भाग लें: इस प्रतियोगिता में प्रत्येक छात्र/छात्रा अपने घर, गाँव एवं विद्यालय में वास करने वाले गौरैया पक्षी का अधिकतम दो फोटो (Soft Copy) अपने पूर्ण पता एवं मोबाईल फोन नम्बर के साथ विभाग के वाट्सअप नम्बर 9473045993 एवं ई–मेल पता biharsparrow@gmail.com पर दिनांक 16–03–2016 तक भेज कर सकते हैं।

प्रतियोगिता सं० 3 – ''गौरैया बक्सा/कृत्रिम घोंसला का डिजाईन''

पात्रता : यह प्रतियोगिता सभी के लिए है।

कैसे भाग लें : अपने घर, गाँव, बागीचा, विद्यालय, कार्यालय, कारखाना इत्यादि में गौरैया संरक्षण के उद्देश्य से गौरैया का रचनात्मक कृत्रिम घोंसला या गौरैया बॉक्स बना कर लगाया गया हो जिसमें सफलतापूर्वक गौरैया वास करता हो, उस प्रकार के घोंसला / गौरैया बॉक्स के डिजाईन के फोटोग्राफी या विडियोग्राफी के साथ उसका विस्तृत आलेख विभाग के ई–मेल पता biharsparrownest@gmail.com पर अपने पूर्ण पता एवं मोबाईल फोन नम्बर के साथ दिनांक 16–03–2016 तक भेज सकते हैं।

श्रेष्ठ तीन विद्यालयों, विद्यार्थियों, एवं सामान्य नागरिकों को पुरस्कृत किया जायेगा।

प्रतियोगिता सं० 4 – चित्रांकन प्रतियोगिता (Painting competition)

विषय:–''गौरैया अपने प्राकृतिक वास में''

पात्रता : स्कूली छात्र/छात्रा (निम्नांकित ग्रुपों में)

ग्रुप 'ए' – तीसरे वर्ग तक के बच्चे। **ग्रुप 'बी'**– चौथे से छठे वर्ग तक के बच्चे।
ग्रुप 'सी'– सातवें से नवें वर्ग तक के बच्चे। **ग्रुप 'डी'**– दसवें से बारहवें वर्ग तक के बच्चे।

कैसे भाग लें:– इस प्रतियोगिता में प्रतिभागी अपने रचनाओं को A3 (30 cm X 42 cm) साईज के चार्ट पेपर में बनाकर तथा चार्ट पेपर के पिछले भाग में अपना नाम, कक्षा, विद्यालय का नाम, पता एवं मोबाईल नम्बर अंकित कर दिनांक 16–03–2016 तक निदेशक, संजय गाँधी जैविक उद्यान, पटना के कार्यालय में जमा कर सकते हैं।

अधिक जानकारी के लिए निदेशक, संजय गाँधी जैविक उद्यान, पटना के कार्यालय से कार्य दिवस के कार्यावधि में स्वंय अथवा दूरभाष सं० 9473045990 / 0612–2217455 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

नोट:

(1) गौरैया बक्सा/कृत्रिम घोंसला की विशिष्टियों की जानकारी विभागीय वेबसाईट www.forest.bih.nic.in पर देख सकते हैं।

(2) सफल प्रतिभागियों की सूची दिनांक 18–03–2016 को विभागीय वेबसाईट www.forest.bih.nic.in पर देखा जा सकता है।

(3) इस प्रकार के कार्यक्रम/प्रतियोगिता 'विश्व गौरैया दिवस'' 20 मार्च को प्रत्येक वर्ष आयोजित कर बिहार राज्य के राजकीय पक्षी गौरैया के संरक्षकों को सम्मानित किया जायेगा।

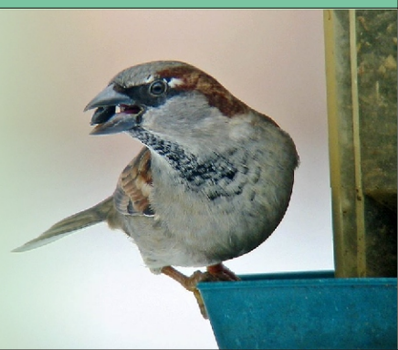

गौरैया बॉक्स की बनाबट

- गौरैया बॉक्स की लम्बाई लगभग 15 सेंटीमीटर होनी चाहिए।
- गौरैया बॉक्स की चौड़ाई लगभग 15 सेंटीमीटर होनी चाहिए।
- गौरैया बॉक्स की उँचाई लगभग 25 सेंटीमीटर होनी चाहिए।
- गौरैया बॉक्स के छिद्र की उँचाई लगभग 16 सेंटीमीटर बॉक्स के तल में होनी चाहिए।
- गौरैया बॉक्स जमीन से 2 मीटर उँचाई पर लगाया जाना चाहिये।

  गौरैया बॉक्स का छिद्र 32 मिलीमीटर गोलाई का होना चाहिए। इससे छोटा होने पर गौरैया के प्रयोग योग्य नहीं रहेगा और बड़ा होने पर अन्य पक्षी प्रयोग में लेंगे।
- बक्से के निचले भाग में 5–6 छोटे–छोटे छेद (2 mm) कर दें ताकि हवा का प्रवाह रहे और तरल पदार्थ बह निकलें। यदि चाहें तो साईड का पल्ला कब्जे पर बनायें ताकि आवश्यकतानुसार बक्से को साफ किया जा सके। किन्तु यह सुनिश्चित करें कि पल्ला बहुत अच्छी तरह बंद रहे अन्यथा परभक्षी बक्से के अन्दर प्रवेश कर सकते हैं।
- गौरैया बॉक्स को नीचे दिये गये चित्र के अनुसार बनाना चाहिये।

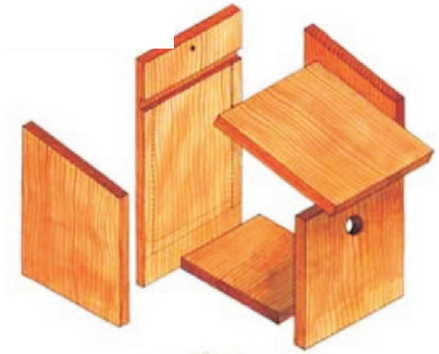

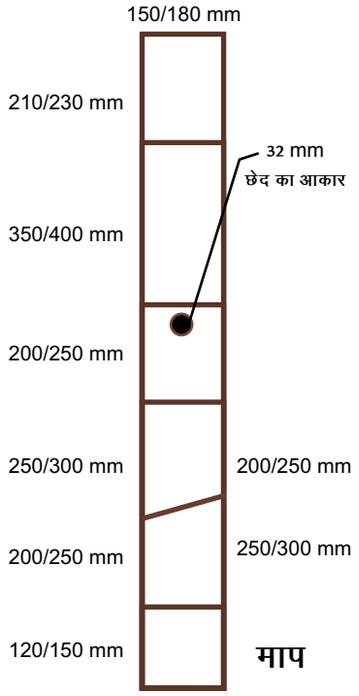

उपरोक्त विशीष्टीयाँ BNHS द्वारा निर्धारित की गई हैं। इनका पालन करते हुए, कम खर्च वाले सामानों का उपयोग कर इसका निर्माण रचनात्मक रुप से करना चाहिए।

बिहार सरकार

पर्यावरण एवं वन विभाग

हमारी नन्ही

और

प्यारी गौरैया

आईए! हम सब मिलकर
बिहार के राजकीय पक्षी

गौरैया

का संरक्षण करें!

गौरैया क्या है –

गौरैया (Passer domesticus) एक छोटी चिड़िया है, जिसके पंख अधिकतर काले या घूसर रंग के होते हैं। इसका सिर गोल, पूँछ छोटी व चोंच चौड़ी एवं नुकीली होती है। इसका मनुष्य के वास स्थानों से प्रबल सम्बन्ध रहा है।

गौरैया लुप्त होती जा रही है क्योंकि –

- गौरैया हमारे साथ रहना चाहती है परन्तु आजकल के आधुनिक घरों में घोंसले बनाने की जगह नहीं रहती है।
- गौरैया काकून, बाजरा, धान, पके हुए चावल के दाने इत्यादि खाती है। अत्याधुनिक शहरीकरण के कारण उसके प्राकृतिक भोजन के स्त्रोत समाप्त हो रहे हैं।
- प्राकृतिक परभक्षी जैसे बिल्लियाँ, कौए, चील और बाज इत्यादि भी गौरैया की मृत्यु का कारण होते हैं।
- छोटे पेड़ एवं झाड़ियाँ काटे जाने से भी इसके प्रजनन में बाधा होती है। गौरैया बबुल, कनेर, नींबू, अमरूद, अनार, मेंहदी, बाँस, बोतल ब्रश, चाँदनी इत्यादि पेड़ों को पसंद करती हैं।
- हजारों मोबाईल फोन के टावर शहरों व गाँवों में लगाये जा रहे हैं, जो कि गौरैया के लिये प्रमुख खतरा हैं। इलेक्ट्रोमैगनेटिक किरणें उनको उत्तेजित करती हैं व उनकी प्रजनन क्षमता को कम करती हैं।
- फसलों के उपर किटनाशक का छिड़काव करने से न केवल मनुष्यों को बल्की गौरैया जैसे पक्षीयों को भी इससे नुकसान होता है।

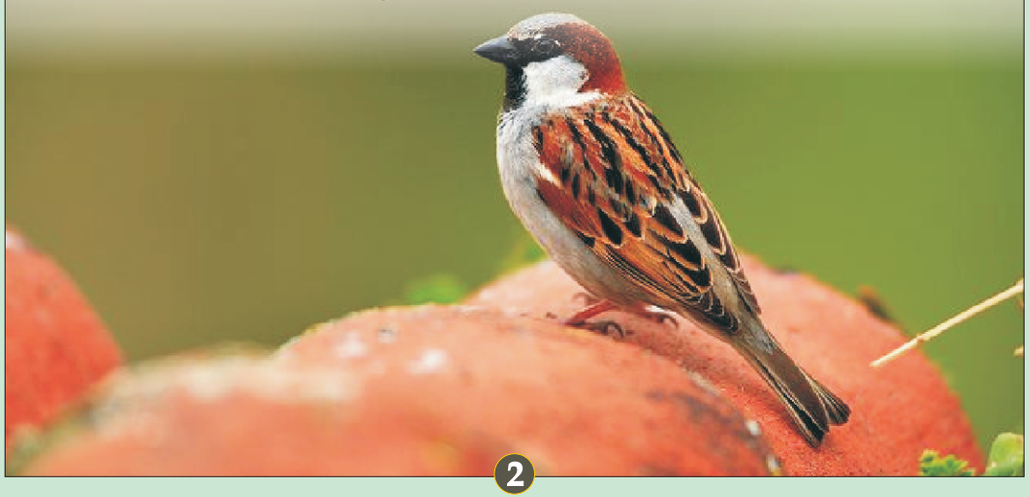

हम गौरैया को क्यों बचाएँ –

- गौरैया और हमारा बचपन से सम्बन्ध है। गौरैया वह चड़िया है जिसके बारे में माँ ने सबसे पहले हमें बताया था।
- गौरैया घरों में मौजूद कीड़े–मकोड़ों को भी खत्म करने में मदद करती हैं।
- गौरैया हमारे पर्यावरण की स्थिति को भी बताती है। गौरैया का कम होना हमारे पर्यावरण के खराब होने का भी संकेत है।
- गौरैया अपने बच्चों को उल्फा एवं कटवर्म खिलाती हैं। उल्फा एवं कटवर्म ऐसे कीट हैं जो हमारे फसलों को नुकसान भी पहुँचाते हैं।
- हम अपने घरों में बने घोंसलों का संरक्षण करें एवं गौरैया के लिए खाने व पानी की व्यवस्था करें।
- हम अपने बगीचे व घरों में गौरैया के रहने के लिए गौरैया बॉक्स लगायें। यह बॉक्स लकड़ी का बन सकता है।
- हम शिक्षा के माध्यम से लोगों में इसके बचाव के लिए जागरूकता लाएं।
- हम 20 मार्च को विश्व गौरैया दिवस के रूप में प्रतिवर्ष धूमधाम से मनाएं।
- कीट–नाशकों के प्रयोग पर रोक लगायें।
- प्रजनन के समय अण्डों की सुरक्षा व दाने पानी की उचित व्यवस्था करें।

– दिलचस्प बातें –

- गौरैया शिथिल पत्निक होती हैं। नर और मादा दोनों हीं बच्चों का ख्याल रखते हैं। हालांकि मादाओं में यह सोच प्रबलता के साथ दिखाई देती है।
- आमतौर पर गौरैया जमीन पर घूमने के क्रम में फूदकती या कूदती है। उम्रदराज गौरैयों को ही बमुश्किल से चलते देखा जाता है।
- ये पक्षी आक्रामक और सामाजिक होते हैं। दूसरे पक्षियों से प्रतिस्पर्द्धा के कारण यह भूमीका और भी उभर जाती है।
- नर और मादा गौरैया में सबसे बड़ा अंतर यह होता है कि नर गौरैया का पीठ लाल होता है और उसपर काला विवहोता है, जबकि मादा गौरैया में आँख की पट्टी के साथ उसका रंग भूरा होता है। वे हर ब्रिडिंग सीज़न में मिलते हैं और फिर एक समूह में जीवन गुजारते हैं।
- गौरैया तीन घोंसलों में 3–5 अंडे देती है। नर और मादा दोनों ही 12–15 दिनों तक अंडों को सेते (इंक्यूबेट करते) हैं। पक्षी के ये छोटे बच्चे 15 दिनों के बाद बाहर उड़ पाते हैं।
- नन्हें मेहमानों के लिए बिल्लियाँ मुख्य तौर पर खतरे का सूचक होती हैं। पक्षियों के घोंसले को छोड़ने के बाद बिल्लियाँ उन अनुभवहीन गौरैयों को अपना शिकार बना लेती हैं। हालांकि वे खतरे से बचने के लिए पानी में तैर सकती हैं, बावजूद इसके इन्हें जलीय पक्षियों में शामिल नहीं किया जाता है।
- यह पक्षी 12 साल तक जीवन जीते हैं। अभी तक सबसे ज्यादा कहीं भी जीने वाली गौरैया की अधिकतम उम्र 15 साल और 9 महीने दर्ज की गई है।
- गौरैया जब परेशान होती है, तो तनाव को कम करने के लिए अपने पूंछ को झटका देती है। 500 शोध पत्रों के माध्यम से इस प्रजाति पर वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन करके इनके बारे में जानकारी प्रकाशित की गई है।

गौरैयों से चहके घर–आँगन

गौरैया हमारी चिरैया

आओ गौरैया बढ़ाएं।

अपनी गौरैया (घर की गौरैया)

बिहार सरकार

पर्यावरण एवं वन विभाग

बिहार का राजकीय पक्षी गौरैया

दिखने में छोटी और मोटी सी, भूरे–भूरे रंगों वाली, छोटी पूँछ, लेकिन शक्तिशाली चोंच की मालकिन । घरों के बारामदों में इसकी चहचहाहट से हीं 'गौरैया' के होने का आभास हो जाता है। इन्हें 'लिटिल ब्राउन जॉब्स' के नाम से भी जाना जाता है। कई प्रजातियों वाली यह पक्षी आमतौर पर आजादी (स्वतंत्रता) का प्रतीक मानी जाती है।

अक्सर गौरैयों को एक छोटी पक्षी मान लिया जाता है, लेकिन सच तो यह है कि वे बहुत हिम्मती होती है। आकार में छोटापन का इन्हें फायदा मिलता है। गौरैया अपने स्वभाव के अनुरूप घरों की खिड़कियों से प्रवेश करने की कोशिश करती है और इस कवायद में सफलता के लिए वह खिड़कियों में शीशे पर प्रहार भी करती है और घरों में छोटी डंडियों से घोंसला बनाती है।

20 मार्च को 'विश्व गौरैया दिवस' घोषित किया गया, लेकिन कुछ लोगों के जेहन में यह सवाल उठता है कि सिर्फ गौरैया को लेकर ही ऐसा फैसला क्यों लिया गया। इसका जवाब लंबा और घुमावदार जरूर है, साथ ही दिलचस्प भी। गौरैया का वैज्ञानिक नाम 'पेसर डोमेस्टिक्स' दिया गया है। और इस प्रजाति की पक्षी का इंसानों के साथ पुराना और घनिष्ठ संपर्क रहा है। इसमें नर प्रजाति की गौरैया गहरे रंग वाली और काले विव वाली होती है, जबकि मादा प्रजाति की गैरैया सामान्यतया भूरे रंग की होती है।

यह अपने तरह की ऐसी अनोखी पक्षी है, जिसे गाँव और शहर में बच्चे पहली नज़र में ही पहचान लेते हैं। स्वंयसेवकों और संगठनों द्वारा कई स्थानों पर कराई गई गिनती में एक डरावना निष्कर्ष सामने आया है, जो इस ओर इशारा करता है कि गौरैयों की संख्या में गिरावट आ रही है। इसे लुप्तप्राय प्रजातियों में शामिल किया गया है और ऐसा संभव भी है कि आने वाले समय में इस पक्षी के लिए हम 'एक समय की बात है' जैसे शब्दों का उपयोग करने लगें और यह किस्सागोई का हिस्सा भर रह जाए।

शहरी इलाकों में इनकी संख्या में ज्यादा गिरावट दर्ज की गई है। बिल्लियाँ और कौवे इन्हें अपना शिकार आसानी से बना रहे हैं। बाड़े और उद्यान की कमी से इनकी नस्ल नहीं पनप पा रही है। भोजन की कमी विशेष रूप से कीड़ों की कमी खतरे का सूचक हैं, क्योंकि ये युवा पक्षियों को बढ़ाने में सहायक होते हैं।

गौरैयों में आ रही गिरावट

गौरैयों को दाना देकर, उनके लिए बाहर पानी की व्यवस्था कर, घर की स्थापना करके और इसे बढ़ावा देकर हम उनका संरक्षण कर सकते हैं। ऐसा होने पर वे सुरक्षित घोंसला बना सकेंगी। और उनकी मदद करके आप कहीं न कहीं से पर्यावरण की मदद कर रहे होते हैं। जाने अनजाने में आप नेचर हीरो बन जाते हैं। इसलिए उनके बुरे वक्त में इन बातों को ठंडे बस्ते में डालने का समय नहीं है, बल्कि आप उनकी सहायकता करके उनके पंखों को नई उड़ान भरने में मदद कर सकते हैं।

नर गौरैया

हमारी नन्ही और प्यारी गौरैया

आईए! हम सब मिलकर बिहार के राजकीय पक्षी गौरैया का संरक्षण करें!

विवरण :

गौरैया एक छोटी चिड़िया है, जिसके पंख अधिकतर काले या घूसर रंग के होते हैं। गौरैया की लम्बाई 14–18 सें.मी. के बीच होती है। इसका सिर गोल, पूँछ छोटी व चोंच लम्बी होती है।

स्वभाव :

इसका मनुष्य के वास स्थानों से प्रबल संबंध रहा हे। गौरैया मजबूत व कठोर पक्षी है, जिसकी आयु 3 से 13 साल तक की होती है। यह सभी प्रकार के वातावरण में जीवन यापन कर लेती है।

प्रजनन :

गौरैया विवर नीडन है यानि कि ये अपना घोसला पेड़ों, चट्टानों, घरों या इमारतों के विवर में बनाना पसंद करती है। प्रजनन का समय अप्रैल से अगस्त तक है, हालांकि कई जगह पूरे साल घोसले देखे गये हैं। गौरैया एक संगमनी है। एक बार में 4–5 अंडे देती है। अंडों का रंग सफेद, हल्का नीला सफेद या हल्का हरा–सफेद होता है। ऊष्मायन– अवधि 11–14 दिन है। चूजे 14–16 दिनों में उड़ने लगते हैं।

वितरण :

प्राकृतिक रूप में भारत के अलावा यूरोप, अफ्रीका, एशिया, म्याँमार व इंडोनेशिया में आसानी से देखी जा सकती है।

पारिस्थितिकीय संतुलन में भूमिका :

गौरैया कीड़े–मकोड़ों को खत्म करने में मदद करती है। वे अपने चूजों को उल्फा एवं कटवर्म खिलाती है जो फसल को नुकसान पहुँचाते हैं। सीधी–साधी गौरैया पर्यावरण का जैव–सूचक है व मनुष्य के साथ हजारों वर्षों से इनका ऐतिहासिक सम्बन्ध रहा है।

जनसंख्या कम होने के अनुमानित कारण :

- भोजन की कमी : अत्यधिक शहरीकरण के कारण चिड़ियों के प्राकृतिक भोजन के स्त्रेत समाप्त हो रहे हैं।
- आवास का हनन : सैकड़ों पेड़ और झाड़ियाँ इमारतें बनाने के लिए काटे जा रहे हैं।
- हजारों मोबाईल फोन के टावर शहरों एवं गाँवों में लगाये जा रहे हैं, जो कि गौरैया के लिए प्रमुख खतरा हैं। इलेक्ट्रो–मैग्नेटिक किरणें उनको उत्तेजित करती हैं व उनकी प्रजनन क्षमता को कम करती हैं एवं या तो उनके चूजे मर जाते हैं या वे अल्प विकसित होते हैं।
- प्राकृतिक परभक्षी जैसे बिल्लियाँ, कौए, चील और बाज इत्यादि भी गौरैया की मृत्यु के कारण हैं।

मादा गौरैया

संरक्षण :

- घर, इमारतों व पेड़ों पर बने घोंसलों का संरक्षण व खाने व पानी की व्यवस्था।
- अपने बगीचों में चिड़ियों को रहने के लिए घर की व्यवस्था करनी चाहिए।
- शिक्षा के माध्यम से लोगों में इसके बचाव के लिए जागरूकता लायें।
- विश्व गौरैया दिवस मनायें।
- कीट–नाशकों के प्रयोग पर रोक लगायें।

बिहार सरकार

पर्यावरण एवं वन विभाग